

मनसा महादेव व्रत कथा PDF

एक समय श्री महादेवजी और पार्वतीजी कैलाश पर्वत पर विराजमान थे। वहाँ शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु चल रही थी। चारों ओर वृक्ष और लताएँ नाना प्रकार के पुष्पों और फलों से शोभा बढ़ा रही थीं। ऐसे सुखद समय में पार्वतीजी ने अपने पति से प्रार्थना की कि हे नाथ! आज अपना चौपड़ पाशा खेलें। तब महादेवजी ने उत्तर दिया कि चौपड़ पाशा के खेल में बहुत छल होता है, कोई मध्यस्थ हो तो खेलें! यह वचन सुनकर पार्वतीजी ने अपनी माया से एक बालक को बिठाया और महादेवजी महाराज ने अपने मंत्रबल से उसे जीवित कर दिया और आदेश दिया कि तुम हम दोनों की जय-पराजय का हाल सुनाते रहो। बताओ कौन जीता और कौन हारा?

तब उस पुत्र ने उत्तर दिया कि महादेवजी जीत गये और पार्वतीजी हार गयीं। तब महादेवजी ने दूसरी बार पाश चलाकर पूछा, तब उस बालक ने उत्तर दिया कि महादेवजी जीत गए और पार्वतीजी हार गईं। इसी प्रकार तीसरी बार भी उसने पूछा, इस बार तो महादेवजी हार गये, परन्तु बालक ने सोचा कि यदि मैंने महादेवजी को बता दिया कि मैं हार गया हूँ, तो वे मुझे श्राप दे देंगे। ऐसा सोचकर उन्होंने फिर कहा कि महादेवजी की जीत हुई है। माता पार्वतीजी ने उस बालक को श्राप दिया कि तुम्हारे शरीर में कुष्ठ रोग हो जाएगा और तुम निर्जन वन में भटकोगे।

उसी समय उसे कुष्ठ रोग हो गया और वह भटकते हुए निर्जन वन में चला गया। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि ब्राह्मणी, इंद्राणी आदि देवताओं की स्त्रियां व्रत करके भगवान शिव की पूजा कर रही थीं। उसका नाम अंगद था, उसने पूछा तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तब उन देवांगनाओं ने उत्तर दिया कि हम मनसा वाचा नाम से प्रसिद्ध महादेवजी की पूजा करती हैं, अर्थात् मन और वाणी को वश में करके अर्थात् मन को सब ओर से हटाकर शिव और पार्वती की पूजा करती हैं, इसीलिए इस व्रत का नाम भी है। तब अंगदजी ने पूछा कि इस व्रत को

करने से क्या फल मिलता है। इसके बाद उन देवताओं की स्त्रियों ने कहा कि इससे सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

अंगदजी ने कहा कि मैं भी यह व्रत करना चाहता हूं। तब उन देवांगनाओं ने चावल की सुपारी दी और व्रत की विधि बताई कि- यह व्रत श्रावण सुदी के प्रथम सोमवार से करना चाहिए। उस दिन कुंवारी कन्या से ढाई पूनी सूत कटवाकर उसे पिरोएं। कार्तिक सुदी चौथ तक प्रत्येक सोमवार को उस धागे तथा श्री महादेवजी की पूजा करनी चाहिए तथा व्रत रखना चाहिए। उद्यापन कार्तिक सुदी चौथ के दिन करना चाहिए। 1/2 सेर घी, 1/2 सेर गुड़, 4/4 सेर आटा लेकर चूरमा बनाएं, उसके चार लड्डू बनाएं, एक भाग भगवान शिव को चढ़ाएं, एक भाग ब्राह्मण या नाथ को दें, एक भाग किसी को दें। बाकी को मोदक के रूप में गाय और खा लें। इसे करें। चारों भाग एक जैसे होने चाहिए. राजा हो या निर्धन, सभी को इतना ही लेना चाहिए। यदि आप अमीर हैं तो भी आपको अधिक नहीं लेना चाहिए और यदि आप गरीब हैं तो भी आपको कम नहीं लेना चाहिए।

यदि कोई व्रत करने वाला पुरुष या महिला मोदक का एक भाग पूरा खाने में असमर्थ हो तो उसे पहले ही मोदक निकालकर किसी को दे देना चाहिए। जिस प्रकार अनंत भगवान के धागे को धारण किया जाता है और उद्यापन करने के बाद उसे जल में विसर्जित कर दिया जाता है।

इस प्रकार अंगद भी चार वर्ष तक प्रति वर्ष व्रत करते रहे। तब व्रत के प्रभाव से पार्वतीजी को दया आ गई और उन्होंने महादेवजी से पूछा कि महाराज मैंने जिसे श्राप दिया था, वह ज्ञात नहीं है। तब तीनों लोकों की समस्त बातों को प्रत्यक्ष जानने वाले महादेवजी ने कहा कि मैं जीवित हूं। तब पार्वतीजी ने कहा कि महाराज यदि ऐसा कोई व्रत हो तो बताएं, जिससे मेरा मानसिक पुत्र पुनः मिल जाए।

तब महादेवजी महाराज ने कहा कि श्रावण सुदी के प्रथम सोमवार को किसी कुंवारी कन्या के हाथ से ढाई साबुत धागा कटवाकर उसका धागा बनाकर उसे केसर आदि से रंगकर, उसमें चार गांठें लगाकर, सुपारी पर लपेटकर रख लें। तांबे के पात्र में शिवजी का स्वरूप मानकर उनकी और शिवजी की पूजा करनी

चाहिए। इस प्रकार सोमवार को भगवान शिव की पूजा करें, आधा सेर घी, आधा सेर गुड़ और 4/4 सेर आटा लेकर चूरमा बनाएं, इसे चार भागों में बांट लें- एक भाग शिवजी को चढ़ाएं, दूसरा भाग किसी को खिलाएं. ब्राह्मण. तीसरा गाय को दे दें और चौथा स्वयं खा लें, यह न तो अधिक होना चाहिए और न ही कम।

इस प्रकार पार्वतीजी ने भी यह व्रत किया। तब व्रत के प्रभाव से अंगद कुष्ठ रोग से मुक्त हो गए और बिना बुलाए अपनी मां के पास चले गए। उन्हें आता देख माता पार्वती प्रसन्न होकर हंसने लगीं तो पुत्र ने पूछा, हे मातेश्वरी! तुम मुझ पर क्यों हँसे? तब माता ने कहा- हे पुत्र! व्रत का प्रभाव देखकर मुझे हंसी आती है। यह तुम्हारे पिता द्वारा बताया हुआ मनसा वाचा का व्रत है। मैंने यह व्रत किया, इसलिये तुम आये हो।

यह सुनकर पुत्र ने कहा, हे अम्बे! मैंने भी यह व्रत किया था। इससे कुष्ठ रोग भी ठीक हो गया है। पार्वती माता ने कहा, हे पुत्र! अब बताओ तुम क्या चाहते हो! तब उस पुत्र ने कहा- हे मातेश्वरी! मेरी इच्छा है कि मैं उज्जैन नगरी पर राज करूं और वहां की राजकुमारी से विवाह करूं। पार्वतीजी ने कहा कि जाओ, तुम्हें उज्जैन का राज्य मिलेगा, फिर तुम मनसा वाचा का यह व्रत करो। इस प्रकार उसने चार वर्ष तक यह उत्तम व्रत किया, तब उसे उज्जयिनी का राज्य प्राप्त हुआ। अब नारदजी राजा युधिष्ठिर को यह बता रहे हैं कि उन्हें राज्य कैसे प्राप्त हुआ, तो सुनो।

उज्जैन के राजा और रानी बूढ़े हो गये थे, उनका कोई पुत्र नहीं था, केवल एक ही राजकुमारी थी। राजा और रानी ने सोचा कि इस लड़की का विवाह किसी राजकुमार से कर दिया जाये और उसे राज्य दे दिया जाये। इसी निश्चय के साथ एक स्वयंवर का आयोजन किया गया जिसमें देश भर के राजकुमार आये। फिर एक हाथी की पूजा करके, उसे सजाकर, हाथ जोड़कर राजा ने कहा- हे हाथी, तुम भगवान का रूप हो, यह माला ले जाओ और उसे पहनाओ जो इस राज्य और राजकुमारी को संभाल सके। योग्य वर ही देना चाहिए। इतना कहकर बालक को हटा दिया गया और हथिनी को पुनः माला पहनाकर प्रार्थना की गई

कि हे माता! माला उसी को पहनाओ जो इस राज्य के योग्य हो। हथिनी दूसरी बार चली गई और माला उसके गले में डाल दी। हाथी पर गणपति की मूर्ति स्थापित कर उन्होंने यही प्रार्थना की। वह देवतुल्य हथिनी थी, अतः द्वार से बाहर आकर उसने तीसरी बार उसी बालक के गले में माला डाल दी।

तब राजा ने नगर सेठ को बुलाया और कहा कि तुम इसे ले जाओ और जुलूस निकाल कर हमारे पास लाओ। राजा की आज्ञा मानकर सेठ उसे ले गया। उसने ऐसा ही किया और अपने खर्च के लिए कुछ गाँव रखकर सारा राज्य अपनी पुत्रवधू को कन्यादान में दे दिया।

शादी के बाद लड़का और राजकुमारी महलों में चले गए, अब वह राजा बन गया है। अब राजा की रानी ने पूछा— हे पतिदेव! आप अपनी जाति और नाम बतायें। तब उस दूल्हे ने उत्तर दिया कि मेरा नाम अंगद है, महादेवजी मेरे पिता हैं और पार्वतीजी मेरी माता हैं। तब राजकुमारी ने कहा कि महाराज, इस नश्वर संसार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे, सच बताइये। तब राजकुमारी के पति अंगदजी ने अपने जन्म का सारा वृत्तांत सुनाया कि मुझे पासे-पासे के खेल में मित्र बनाने के लिए माता पार्वतीजी ने अपनी माया से उत्पन्न किया था और महादेवजी महाराज ने अपनी माया से मुझे जीवित कर दिया था। फिर जिस प्रकार मुझे शाप दिया गया, जिस प्रकार इंद्राणी आदि देवताओं की स्त्रियों ने मुझे मनसा का व्रत बताया, जिसे मैंने चार वर्ष तक किया, फिर अपने माता-पिता के पास लौट आई।

माँ ने मुझे गले लगा लिया और बोली अब तुम्हारी क्या इच्छा है? तब मैंने माताजी से उज्जयिनी के राज्य की इच्छा प्रकट की। फिर माताजी की सलाह पर मैंने चार वर्ष तक मनसा वाचा नाम से व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से आज मुझे उज्जयिनी का राज्य प्राप्त हुआ तथा तुम्हारे जैसी रानी प्राप्त हुई। लेकिन मेरे राज्य का कार्यकाल पूरा हो गया है, अब मैं अपने माता-पिता के पास कैलाश जाता हूँ। मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हें वरदान दूँगा और उपाय बताऊँगा। यह वचन सुनकर राजकुमारी बोली, महाराज, मुझे पुत्र, धन और

राज्य का सुख चाहिए। अंगदजी ने अपनी रानी को शिवजी का व्रत बताया और कहा कि मेरे और गर्भ के बिना ही तुम्हें पुत्र प्राप्त होगा। यह कहकर अंगदजी कैलाश चले गये।

अपने पति की आज्ञानुसार राजकुमारी ने चार वर्ष तक इस उत्तम व्रत को किया। इससे महादेवजी प्रसन्न हुए। एक दिन इस रानी ने दासी से कहा कि जाकर पानी ले आओ, मैं दातून कर दूंगी। , दासी ऊपर गई तो उसने देखा कि एक छोटा सा सुन्दर लड़का सोने की पालकी में सो रहा है और अपना अंगूठा मुँह में लेकर चूस रहा है। दासी ने जाकर रानी को यह बात बतायी। क्यों प्रभु! यदि आपने मुझे यह बालक दिया है तो मेरे स्तनों से भी दूध की धारा निकलनी चाहिए। इतना कहते ही उसके स्तनों में दूध आ गया. इस प्रकार बालक बड़ा होने लगा।

एक दिन उस बालक ने अपनी माँ से पूछा- हे माँ! मेरे पिता कौन हैं और उनका नाम क्या है? तब उस रानी ने कहा कि तुम्हारे पिता अंगदजी हैं और महादेव-पार्वतीजी तुम्हारे दादा-दादी हैं। तब बालक, जिसका नाम फूलकंवर था, ने अपनी माँ से कहा कि मृत्युलोक में इसे कोई स्वीकार नहीं करेगा। सारा वृत्तांत सुनाया कि तुम्हारे पिता अंगदजी का जन्म पार्वतीजी की इच्छा और माया से हुआ था और महादेवजी ने उन्हें जीवित कर दिया था। चौपड़ पाशा के खेल में झूठ बोलने के कारण शिव पार्वती की माँ ने उन्हें श्राप दे दिया, जिससे वे कोढ़ी हो गये। उसे जाकर जंगल में भटकना पड़ा। तब मनसा व्रत करने से वे ठीक हो गये और माता पार्वती से पुनः मिल गये।

आपकी माता पार्वती के कहने पर आपके पिता ने पुनः मनसा वाचा शिवजी का व्रत किया। फिर उसे उज्जयिनी का राज्य मिल गया और उसने मुझसे विवाह कर लिया। उनका मासिक धर्म कुछ ही दिनों का था इसलिए वे अपने माता-पिता के साथ कैलाश चले गये। और उनके बताये व्रत को चार वर्ष तक करने से तुम बिना गर्भधारण किये ही पुत्र रूप में प्रकट हो गये। अब तुम्हारी क्या अभिलाषा है, बताओ?

माता की बातें सुनकर पुत्र ने कहा- हे माता! मैं चेदिराज की पुत्री से विवाह करना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने उसकी प्रशंसा सुनी है। तब माता ने कहा कि हे पुत्र! तुम भी मनसा वाचा का व्रत करो, इस व्रत को करने वाले को कुछ भी दुर्लभ नहीं है। उज्जयिनी के राजकुमार से करो। चेदिराज ने भगवान शिव के वचन का पालन किया और अपनी बेटी का विवाह उज्जैन के राजकुमार से कर दिया। अब वह राजा बन गया है।

एक दिन वह शिकार खेलने जंगल में गया। वहां उसे कोई शिकार नहीं मिला। भूख-प्यास से व्याकुल होकर वह एक बगीचे में विश्राम करने चला गया। देवयोग से एक ब्राह्मण वहाँ आया। तो आज मनसा वाचा का व्रत जलाना है। राजा ने कहा, महाराज! हमसे भूल हो गई, अब तुम हमसे पूजा कराओ।

ब्राह्मण ने पूजा के लिए रानीजी के पास नगर में समाचार भेजा कि राजा साहब शिकार खेलने के लिये यहाँ जंगल में ठहरे हैं। आज कार्तिक सुदी चौथ का उजिर्ना है इसलिए साढ़े चार सेर आटा, सवा सेर घी और सवा सेर गुड़ बनवाकर मंगवाया है। इस पर रानी ने सोचा कि मेरे साथ बहुत से सैनिक हैं, इतनी सारी टुकड़ियों से क्या होगा? तो उसने गाड़ी भरकर भेज दी। नियम विरुद्ध अत्यधिक प्रसाद देने के कारण महादेवजी स्वप्न में राजा पर क्रोधित हो गये। कहा कि तुम अपनी रानी को हटा दो, नहीं तो मैं तुम्हारा राज्य नष्ट कर दूंगा!! राजा ने प्रमाण के अनुसार पुनः चूरमा बनाकर व्रत पूरा किया।

महादेवजी के कथनानुसार राजा ने रानी को महल से निकाल दिया। रानी ने किला छोड़ दिया। कुछ दूर जाने पर उसकी मुलाकात दीवान से हुई। दीवान ने पूछा, कहाँ घूम रही हो महारानी? रानी ने सारी बात बताई। तब दीवान ने कहा कि- मैं राजा साहब को मना लूंगा, तब तक आप मेरी हवेली पर आ जायें। जैसे ही रानी दीवान की हवेली में गयी, दीवान अंधा हो गया। नगर से निकलने के बाद उसे नगर सेठ मिला। उन्होंने यह भी कहा कि वह एक-दो दिन में राजा साहब को मना लेंगे, तब तक आप हमारे घर पर ही रुकें। ऐसा ही हुआ और

अनेक उपद्रव होने लगे। तब सेठ ने भी हाथ जोड़कर कहा कि रानी जी आप यहां से आ जाओ।

रानी आगे बढ़ी तो उसे राजाजी का कुम्हार मिला। उसे रानी पर दया आ गई। वह रानी को अपने घर ले गया। जैसे ही रानी कुम्हार के घर गई तो उसका जूड़ा टूट गया, जिससे सारे बर्तन टूट गए और कुम्हार भी अंधा हो गया। तब कुम्हार ने भी रानी से अपना घर छोड़ देने की प्रार्थना की। आगे जाने पर उसकी मुलाकात एक माली से हुई। तो माली को दया आ गई और वह रानी को अपने बगीचे में ले गया। माली ने कहा कि जब तक राजा का क्रोध शांत न हो जाए तुम यहीं बगीचे में रहो। क्यारियों का पानी भी सूख गया और माली को भी कम दिखाई देने लगा। तब माली ने भी रानी को वहाँ से चले जाने को कहा।

रानी वहाँ से चली गई और सोचने लगी कि मैंने ऐसा कौन सा पाप किया है कि मैं जहां भी जाती हूँ, वहाँ अनर्थ होने लगता है। ऐसा सोचते हुए रानी ने देखा कि आगे दो रास्ते हैं। पूछने पर पता चला कि एक छह महीने का रूट है और दूसरा सिर्फ तीन दिन का। रानी केवल तीन दिन तक चली।

आगे बढ़ने पर क्षिप्रा नदी मिली। रानी दुखी होकर उसमें कूदकर आत्महत्या करना चाहती थी, लेकिन जैसे ही वह नदी में कूदी, नदी ही सूख गई। आगे चलने पर एक पहाड़ आया। उसने सोचा कि इस पर चढ़कर गिर जाऊँ। जब वह चढ़ कर गिरने लगी तो पहाड़ ज़मीन के बराबर हो गया। आगे बढ़ते ही एक शेर दिखाई दिया। रानी ने सोचा कि अगर मैं इस शेर को छेड़ती हूँ तो बेहतर होगा कि यह मुझे खा जाए लेकिन जब उसने उस पर हाथ फेरा तो शेर पत्थर का हो गया।

आगे जाने पर एक विशाल अजगर साँप दिखाई दिया। जब रानी ने उस बड़े साँप को मरने के लिए चिढ़ाया तो साँप रस्सी बन गया। हारकर जब रानी आगे बढ़ी तो उसने देखा कि वहाँ एक बड़ा भारी पीपल का पेड़ है, उसके पास एक सुन्दर कुआँ और एक मन्दिर बना हुआ है। वह मंदिर में गई और अपना चेहरा ढककर बैठ गई और इस पंचाक्षर मंत्र "ओम नमः शिवाय" का जाप करने लगी।

वह दिन कार्तिक सुदी चौथ का दिन था, मंदिर का पुजारी नाथ सामान लेने गांव गया था। वहां उसे कुत्ते ने काट लिया। तब पुजारी नाथ ने सोचा कि हमारे आश्रम में ऐसा कौन पापी आया है, जिसके कारण यह अनर्थ हुआ है। मंदिर में जाकर नाथ ने एक स्त्री को बैठे देखा तो कहा कि आज यहां कोई डाकन या भूत आया है। तब रानी ने नम्रतापूर्वक कहा कि महाराज, मैं न डाकन हूं, न भूत-प्रेत हूं, मैं तो एक मनुष्य हूं। मैं आकाश और पृथ्वी से घिरी एक उदास महिला हूं। यदि आप मुझे धर्म की पुत्री बना देंगे तो मैं अपना सारा भेद बता दूंगी।

जब नाथ ने यह स्वीकार कर लिया तो रानी ने अपना सारा भेद बता दिया और जब जाने लगी तो उससे चला नहीं जा रहा था। तब नाथ ने उसे उजीरना का एक लड्डू दिया। लड्डू देखते ही रानी को व्रत का स्मरण हो आया। नाथ ने यह भी बताया कि आज कार्तिक सुदी चौथ है, यह मनसा वाचा के व्रत का प्रसाद है। इसका नियम यह है कि यदि वह राजा हो तो भी उसे अधिक प्रसाद नहीं बनाना चाहिए और यदि वह निर्धन है तो भी उसे कम नहीं बनाना चाहिए। यह लड्डुओं का एक भाग है। तब रानी को समझ आ गया कि मैंने प्रसाद अधिक भेज दिया है, इसमें महादेवजी का दोष है।

ऐसा विचार कर रानी ने नाथजी से प्रार्थना की कि हे महाराज! अब मैं भी यह व्रत करना चाहता हूं। तब नाथ ने कहा कि इस श्रावण सुदी चौथ आ रही है, तुम इस दिन से व्रत करना शुरू करो। वह सोमवार को व्रत और पूजा करती रही। जब कार्तिक सुदी चौथ आई, तब नाथजी गाँव गए और सामान ले आए। सवा सेर घी, सवा सेर गुड़, सवा सेर आटे का चूरमा बनाया। चूरमे को चार भागों में बांटकर भगवान शिव और पार्वती की पूजा की।

इस प्रकार चार वर्ष तक व्रत करने के बाद महादेवजी महाराज ने राजा को स्वप्न में दर्शन दिये और कहा, राजन! अब तुम रानी को बुलाओ, नहीं तो मैं तुम्हारा राज्य नष्ट कर दूंगा। तब राजा ने कहा कि महाराज! अब रानी का पता लगाना कठिन है। आपके आदेश पर ही उसे देश से निकाला गया। तब महादेवजी ने

कहा कि हे राजन! तुम चार वफादार सेवकों को पूर्वी दरवाजे पर भेज दो, वहां बिना जंजीर वाले बैलों से जुती हुई एक गाड़ी आएगी, वह गाड़ी वहीं रुकेगी जहां तुम्हारी रानी होगी।

प्रातःकाल राजा ने चार आदमी भेजे। बिना जुते बैलों की एक गाड़ी आगे आ गयी। चारों उसमें बैठ गये और उसी मन्दिर में गये जहाँ रानी थी। वहाँ सेवकों ने रानी को पहचानकर कहा, हे रानी! अब चलो, राजा साहब ने तुम्हें बुलाया है और हमें इस काम के लिये भेजा है। तब रानी ने नाथजी से कहा कि मैं आपके धर्म की पुत्री हूँ इसलिए आप मुझे पढ़ाकर भेज दीजिए। तब नाथजी ने एक हाथी घोड़ा और एक पालकी बनाई और मंत्रों का छिड़काव किया, जिससे वे असली हाथी घोड़ा पालकी बन गए।

रानी ने फिर नाथजी से कहा, हे पिताजी! आते समय मेरे रास्ते में रुकने से अनेक प्राणियों की हानि हुई, अतः उनकी भी रक्षा करनी चाहिए, अन्यथा यह पाप मुझे भी लगेगा। हे पुत्री! आप इस जल को “ॐ नमः शिवाय” कहते हुए छिड़कते रहें, इससे आपके सभी पाप दूर हो जाएंगे।

अब रानी ने शिव पार्वतीजी और नाथजी को प्रणाम किया और उन चारों सेवकों के साथ, जो उन्हें लेने आए थे, चली गईं. जाते समय वही साँप आ गया। तब वह शिवजी से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभु मेरे पाप के कारण यह साँप रस्सी बन गया है, अब यह फिर से साँप बन जाए, उसने उस पर झरी का जल छिड़का, जिससे वह पहले जैसा साँप बन गया। वह पत्थर की तरह पड़ा हुआ मिला, रानी ने उस पर भी झरी का जल छिड़का, तब वह भी जीवित हो उठा और जंगल में भाग गया। आगे चलने पर वह एक पहाड़ के पास आया जो जमीन के बराबर हो गया था, प्रार्थना करने और जल छिड़कने से वह जीवित हो गया। पहाड़ भी पहले जैसा हो गया। आगे जाने पर वही नदी आयी जो सूख गयी थी। रानी ने शिव का ध्यान करके जल छिड़का, जिससे वह भी फिर से गहरे और स्वच्छ जल वाली नदी बन गयी।

अब रानीजी ने पालकी, हाथी और घोड़े किले में भेज दिये और स्वयं उसी बगीचे में चली गयी जो पहले ही सूख गया था। माली ने कहा, रानीजी तुम फिर क्यों आ रही हो? आपके आने से पहले ही यह बगीचा उजड़ गया था। लेकिन रानी के समझाने पर माली ने द्वार खोल दिया. रानी ने बगीचे में जाकर भगवान शिव का ध्यान किया और झारी का जल छिड़का, जिससे बगीचा पहले से भी हरा-भरा हो गया। वहाँ बहुत सारे कोयले थे। वह बोलने लगी, तरह-तरह के फल-फूल आने लगे और कुएं पानी से भर गये।

तब रानीजी उसी कुम्हार के घर गईं, कुम्हारन की आंखें खुल गईं और पानी छिड़कने से न्याव के बर्तन सोने-चांदी के हो गए। कुम्हारन ने कहा कि रानी ये सोने के बर्तन हमें कौन रखने देगा। तब रानी ने कहा कि इनमें से चार बर्तन राजा को भेंट किये जायें।

इसी प्रकार जब रानी नगर सेठ के घर गयी तो उसका बर्तन उबलने लगा और व्यापार में लाभ होने लगा. तब नगर सेठ ने कहा कि अन्नदाता जी आपके आगमन से हमें यहां सफलता मिली है, इसी खुशी में मैं पूरा नगर बसाना चाहता हूं। उन्होंने शहर में ढोल पीट दिए ताकि कल कोई घर में धूम्रपान न करे। अगर कोई चूल्हा जलायेगा तो उसे सजा मिलेगी। जब रानीजी आगे आईं तो दीवानजी के यहाँ पहुँचीं। हरेक प्रसन्न है

अब रानी साहिबा किले में आ गयीं। राजाजी ने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया. नगर सेठ सारे नगर को इकट्ठा करके किले में गया और रानीजी से प्रार्थना की कि - अन्नदाता, अब आप भी स्वस्थ हो जायें!! रानी ने कहा कि आज मुझे कार्तिक सुदी चौथ मनानी है इसलिए मैं एक भूखे मनुष्य को जन्म दूंगी. सारे नगर के लोग नगर सेठ के यहाँ जिम करने आते थे, नगर में कोई भी भूखा व्यक्ति न मिलता था। धोबी को ढूँढ़ते समय उसे वहाँ एक अंधा, बहरा, कुष्ठ रोगी धोबी पड़ा हुआ मिला। रानी की आज्ञा से उन्होंने उसे बुलाया। रानी ने उसे नहलाया। ऐसा कराते ही उसका सारा कोढ़ दूर हो गया। कथा कहते ही स्वर्ग से

उसके लिए विमान आया और बूढ़ी धोबन केवल कथा सुनकर और प्रसाद लेकर वैकुण्ठ चली गई।

राजा और रानी भी हर वर्ष मनसा वाचा का पालन करते रहे। उन्होंने संसार के सभी सुखों का आनंद लिया और अपने पुत्र को राजगद्दी सौंपकर शिवलोक चले गये।

इस प्रकार मनसा वाचा में भगवान शिव-पार्वतीजी के व्रत की बड़ी महिमा है। श्रावण सादी की सोम से कार्तिक सुदी चौथ तक यह व्रत सभी मनोवांछित फल देने वाला है।

pdfinbox.com